भारत में टिड्डी का अटैक

कृषि कुंभ (जुन, 2023),
खण्ड 03 भाग 01, पृष्ठ संख्या 13–14

भारत में टिड्डी का अटैक

रवि कुमार रजक[1] एवं ओम नारायण[2]
[1]शोध छात्र, कीट विज्ञान विभाग, [2]शोध छात्र, फल विज्ञान विभाग
आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविघालय कुमारगंज, अयोध्या, उतर प्रदेश–224229, भारत।
Email Id: ravikumarrajak0106@gmail.com

परिचय

भारत देश में कई साल बाद टिड्डी दलों के सबसे भयानक हमले से करीब 90 हजार हेक्टेयर फसलें हरियाली उजड़ गई हैं। और राजस्थान के करीब 20 जिले इसकी चपेट में है। और ऐसे में टिड्डी दलों की चपेट में आने वाली फसलों और हरियाली का आंकड़ा और ज्यादा बढ़ना तय है। और राजस्थान के अलावा मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र में भी टिड्डी दलों के हमले हो रहे हैं। और भारत में पहली बार 1812 में टिड्डी दल आया था और अभी तक लगभग 26 बार इसका प्रकोप हो चुका है।

यह दुनिया की सबसे खतरनाक कीट होती हैं टिड्डियां और दुनियाभर में टिड्डियों की लगभग 10 हजार से ज्यादा प्रजातियां पाई जाती हैं। लेकिन भारत में केवल तीन प्रजाति ही मिलती हैं। और इसमें रेगिस्तानी टिड्डी और प्रवासिनी टिड्डी एवं मुम्बइया टिड्डी आदि शामिल हैं। इनमें रेगिस्तानी टिड्डीं को सबसे ज्यादा खतरनाक माना जाता है। और

टिड्डी की तीनों जातियों की पहचान–

मुम्बइया टिड्डी– यह टिड्डी भारत और मलाया में पाई जाती है। यह कभी समुह बनाकर नही रहती है। और इसके पिछले पंख गुलाबी होते है। और इनकी

ऑखों में 8 धारियॉ होती है। इसकी वर्ष में एक ही पीढ़ी मिलती है। और भारत में यह मुम्बई और गुजरात एवं तमिलनाडू में मिलती है।

प्रवासिनी टिड्डी – इस टिड्डी के पिछले पंख पीले होते है। और ऑखों में कोई धारियां नही होती है। यह टिडडीयॉ गर्मी में पाकिस्तान से आती है।

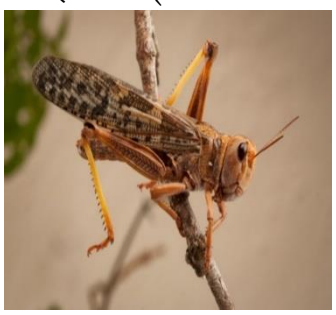

रेगिस्तानी टिड्डीं– यह सबसे खतरनाक होती है। और इसका रंग चमकीला पीला एवं सिर मजबूत तथा उठा हुआ होता है। और इसकी ऑखों में 6 से 7 धारियॉ होती है। और यह हमेशा समुह में रहती है।

भारत में कैसे पनपती हैं टिड्डियां

ग्लोबल वॉर्मिंग के चलते और मौसम में आए बदलाव को कारण माना जा रहा है। कि टिड्डी दलों की आबादी और हमले बढ़ रहे है। और इसकी एक मादा टिड्डी अपने जीवन में कम से कम तीन बार अंडे देती है और एक बार में लगभग 50 से 155 अंडे तक दे सकती है। और इसकी मादा बालू में 8 से 15 सेमी गहरे

गढडे स्वम बनाती है। और फिर उसमें अण्डे देती है। और एक वर्ग मीटर में टिड्डिय के करीब 1000 अंडे हो सकते है। और एक टिड्डी का जीवन सामान्यतय तीन से पांच महीने का होता है दूसरी तरफ, ये नमी वाले इलाकों में पनपते रहते है।

टिड्डी दलों की तादाद और हमले बढ़ने का कारण हमेशा बे मौषम बारिश रही है। लाल सागर से अरबी प्रायद्वीप की बात हो या पाकिस्तान और भारत की, पिछले एक से दो साल के दौरान लगभग हर महीने बारिश हुई। बेमौसम बारिश से नमी पाकर ये कीट भयानक रूप से बढ़े। और विशेषज्ञों की मानें तो पहले प्रजजन काल में टिड्डियां 20 गुना बढ़ती है। दूसरे में 400 और तीसरे में 1600 गुना तक बढ़ जाती है।

टिड्डियों को भगाने और मारने के उपाय–

टिड्डियों को भगाने के परंपरागत उपायों में थाली का बजाना, और खेतों में धुंआ करना शामिल हैं। और

टिड्डियों का दल आवाज के कंपन को महसूस करता है। और इस कारण आजकल इन्हें भगाने के लिए डीजे का भी प्रयोग किया जाने लगा है। यह कीट आवाज को दूर से भांपकर अपना रास्ता बदल लेते हैं अथवा खेतों से उड़कर दूर चले जाते हैं। और इसके अतिरिक्त, फसलों को टिड्डी दल के हमले से बचाने के लिए हेस्टाबीटामिल, क्लोरफाइरीफॉस और बेंजीएक्सटाक्लोराइड का खेतों में छिड़काव करना चाहिए। और साथ ही ड्रोन से रसायन का छिड़काव किया जा रहा है। वहीं सरकारी

स्तर पर भी इस तरह के प्रयास किए जाते हैं। हालांकि इतने बड़े पैमाने पर ऐसे उपाय करना काफी मुश्किल काम है। वहीं खाली पड़े खेतों में टिड्डी दल अंडे देता है। और जिन्हें नष्ट करने के लिए खेतो में गहरी खुदाई की जानी चाहिए और फिर इनमें पानी भर देना चाहिए

हमला हो जाने की दशा में टिड्डियों पर काबू पाना मुश्किल होता है। क्योंकि

इसके लिए कीटनाशक का हवाई छिड़काव या विशालकाय स्प्रेयर से स्प्रे किया जाना होता है। भारत में यह सुविधा अब भी बहुत दुर्लभ है। और टिड्डियों के हमले को रोकने का उपाय सावधानी है। यानी टिड्डियों के अंडों को पनपने से पहले नष्ट किया जाना चाहिए। इसके अलावा फसलों को ढांकना, टिड्डियों को खाने वाले पक्षियों को पालना, लहसुन के पानी का छिड़काव जैसे– प्राकृतिक उपाय भी बताए जाते हैं। रासायनिक उपायों में कारबैरिल को टिड्डियों के लिए सबसे असरदार माना जाता है। लेकिन इसके छिड़काव से फसलों के लिए उपयोग कीट भी नष्ट होते हैं। साथ ही, कैनोला तेल को कीटनाशक में मिलाकर स्प्रे का तरीका भी कुछ जगह अपनाया जाता है। एक दिन में लगभग डेढ़ सौ किलो मीटर तक उड़ने वाले टिड्डी दलों को अगर रोका न जाए तो ये देश के लिए खाद्य सुरक्षा का खतरा पैदा कर सकते है। और इसकी रोकथाम बहुत ही आवश्यक हैं।